शिक्षक माली बन संस्कारित बगिया का निर्माण करे–दादी जानकी

शान्तिवन, आबू रोड, 17 मई। आज चारो तरफ मूल्यों का पतन तेजी से हो रहा है। जबकि कहा जाता है कि शिक्षा ही मनुष्य को ऊंचा उठाती है और एक सभ्य समाज का निर्माण करती है। परन्तु आज जितनी शिक्षाओं का दायरा बढ़ता जा रहा है उतना ही मूल्यों में पतन हो रहा है। शिक्षक देश व समाज का निर्माता होता है वह श्रेष्ठ संस्कारों से सुन्दर बगिया का निर्माण करें–उक्त उददगार ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने व्यक्त किये। वे शान्तिवन में आयोजित अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक शिक्षाविदों के महासम्मेलन में देश भर से आये 6 हजार से भी ज्यादा शिक्षाविदों को सम्बोधित कर रही थी।

आगे उन्होंने कहा कि समाज में अनेक प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो रही है। आज की युवा पीढ़ी पथभ्रमित हो रही है। अश्लीलता और मूल्यों का अवमूल्यन तेजी से हो रहा है। इसके लिए शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है। जब तक हम अपने अन्दर मूल्यों को अपनायेंगे तब तक एक सुखमय जीवन नहीं व्यतीत कर सकते। आज आवश्यकता है शिक्षा की क्रान्ति आध्यात्मिक क्रान्ति का समावेश करें। यह सम्मेलन निश्चित तौर पर इस दिशा में कारगर साबित होगा।

एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 दिल्ली के स्पोर्ट के निदेशक तथा पदमश्री एवं राष्ट्पति अवार्ड से सम्मानित सतपाल शेरावत ने कहा कि यदि हमारे देश को बचाना है तो शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा को अपनाना ही होगा। आज हर प्रकार की शिक्षायें दी जा रही है फिर भी समाज में अनेक बुराईयां अपना पैर पसार रही है। जब तक हम इनकी जड़ में नहीं जायेंगे तब तक इसका उन्मुलन नहीं होगा। आज पैसों के ढेर पर सोने वालों को भी चैन और शान्ति नहीं है। शान्ति का केन्द्र दौलत नही बल्कि आध्यात्मिक शक्ति है। उन्होंने लोगों से अपील की कि हम सबको मिलकर ऐसी संस्थाओं का सहयोग करना चाहिए जिससे लोगों में एक आदर्श जीवन का निर्माण हो सके। बेहतर तो यह होगा कि हम इस भौतिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा को भी अंगीकार करें। ब्रह्माकुमारी संस्था समाज में इन मॅूल्यों को स्थापित करने का महान कार्य कर रही है। जिसका उदाहरण पूरे विश्व में विराट स्तर पर फैलाव है।

राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र0 क0 निर्वेर ने कहा कि आज भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के शिक्षण संस्थानों की दुर्दशा हो रही है। शिक्षा के ये संस्थान व्यापार के केन्द्र बन गये हैं। हम सभी को चाहिए कि हम अपने जीवन को श्रेष्ठ और आदर्श बनाकर शिक्षा के प्रतिमूर्ति बनें यही वास्तविक शिक्षा है इससे ही एक सभ्य समाज बनेगा।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र0 कु0 मृत्युंजय ने कहा कि मनुष्य के अन्दर अनेक बुराईयों के कारण उसका मन विकृत हो गया है। आज अपराधमुक्त समाज बनाने के लिए वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में आध्यात्मिक मूल्यों की अति आवश्यकता है। और इसके लिए हम सभी को मिलकर सकारात्मक प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम को राजयोग शिक्षिका ब्र0 कु0 ऊषा ने राजयोग का अभ्यास कराया तथा ब्र0 कु0 शीलू बहन ने कार्यक्रम का संचालन किया।